Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

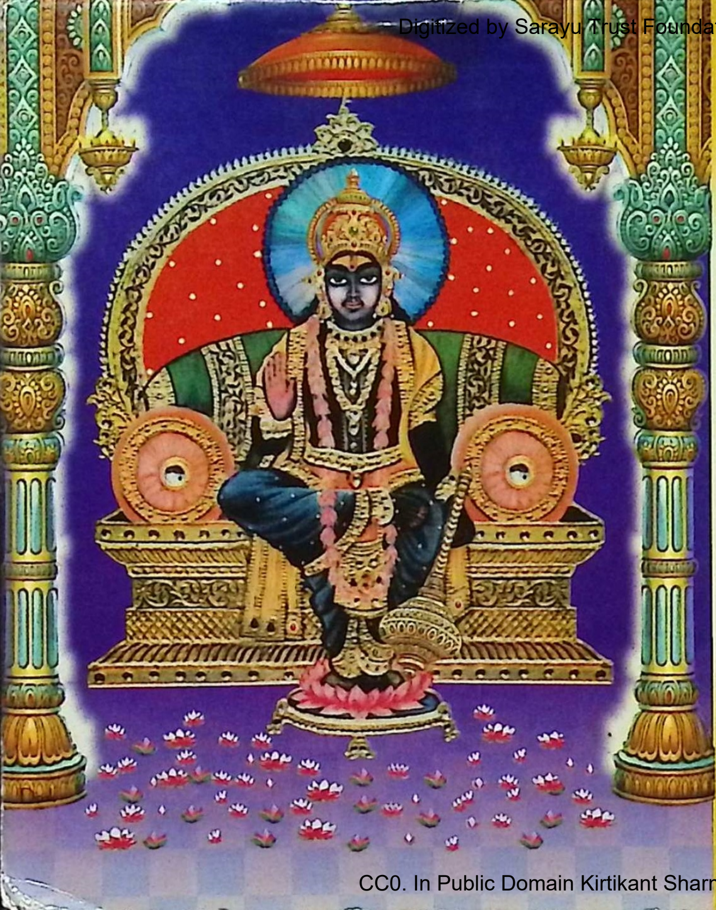

॥ ॐ ॥

शनिस्तोत्रम्

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

प्रकाशक :
नाथ पुस्तक भण्डार
१९४-दरीबा कलां, दिल्ली-११०००६

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ शनैश्चराय नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शनिस्तोत्रम्

(महाकालशनिस्तोत्रादिसंग्रह, वेदतन्त्रोक्तशनिमन्त्रजपप्रयोगविधि व भाषाटीका सहितम्)

सम्पादकः

स्व० पं० प्रेमदत्तशास्त्री

संस्थापकः- वेदाचार्य रामजीलाल पालीवाल सांगवेद विद्यालय, नजफगढ़, नई दिल्ली-११००४३

अनुवादक व संशोधक

आचार्य डॉ० गणेश शुक्ल

सन् १८९९ ई० पूर्व स्थापित पुस्तक प्रकाशन परम्परा

— प्रकाशक —

नाथ पुस्तक भण्डार

१९४-दरीबा कलां, दिल्ली- ११०००६

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रकाशकः–

卐 नाथ पुस्तक भण्डार
१९४–दरीबा कलां, दिल्ली– ११०००६
दूरभाषः–२३२७ ५३४४

सम्पादक : स्व० पं० प्रेमदत्तशास्त्री

अनुवादक : आचार्य डॉ० गणेश शुक्ल

सर्वाधिकार : © प्रकाशकाधीन

प्रथमावृत्ति : सितम्बर, सन् २००८

मूल्य : रु० २५.०० डाक व्यय पृथक्

शिवनाथ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भूमिका

आकाशमण्डलीय ग्रहों के प्रभाव को वैज्ञानिक, धार्मिक या भौगोलिक दृष्टि से अवश्य स्वीकार किया जाता है। सभी ग्रहों में शनि का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ज्यौतिष में शनि क्रूरग्रह के रूप में प्रतिष्ठित है। पुराणों के आधार पर शनि विनम्र एवं कृष्णभक्त है। लोकाचार से अनभिज्ञ शनि ने ऋतुस्नाता पत्नी की उपेक्षा की, जिससे क्रोधित होकर उसने शनि को शाप दे दिया कि जिसे तुम देखोगे उसकी मृत्यु हो जायेगी। जब पत्नी को शनि की वास्तविक स्थिति का बोध हुआ तो उसे अत्यन्त पश्चात्ताप हुआ और उसने शनि के शाप मोचनार्थ अनेक प्रयास किये परन्तु शनि शापमुक्त नहीं हुए। तब से लोकहितार्थ शनि किसी को भी नहीं देखना चाहता है। **"ततः प्रभृति नम्रास्यः प्राणिहिंसाभयादहम्"** इसलिए शनि सदा गर्दन झुकाये रहता है।

एक बार हिमालय में गणेश जी का जन्मोत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया जा रहा था। सभी देवी-देवता और ग्रहादि गणेश जी को शुभकामना प्रदान कर रहे थे। शिव ब्रह्मादि देवताओं के कहने पर शनिदेव भी गणेश जी के दर्शनार्थ गये, जिन्हें द्वारपाल विशालाक्ष ने रोक दिया। तब शनि ने कहा कि पार्वती जी से कहो कि शिव ब्रह्मादि देवों ने उन्हें गणेश जी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

के दर्शनार्थ भेजा है। तब माता पार्वती ने उन्हें आने की अनुमति दे दी। कक्ष में आने के पश्चात् शनि अधोमुख वहाँ बैठ गये। शनि को अधोमुख बैठे देख कर माता पार्वती ने कहा, आप तो गणेश जी के दर्शनार्थ आये हैं तो फिर गणेश जी को क्यों नहीं देखते?

तदनन्तर शनिदेव ने अपनी व्यथा-कथा माँ पार्वती को सुनायी कि मैं ऐसी स्थिति में गणेश जी के दर्शन कैसे कर सकता हूँ। तब माँ पार्वती ने कहा आप निःसंकोच गणेश जी के दर्शन कर सकते हैं। **"पश्य मां मच्छिशुमिति निषेकः केन वार्यते"** (ब्र. वै. पु. श.-२१) पार्वती जी की आज्ञा से शनिदेव ने धर्म को साक्षी मानते हुए अत्यन्त संकोच से दायीं आँख के कोण से गणेश जी को देखा। शनि के देखते ही गणेश जी का शिर कट गया और माँ पार्वती की गोद रक्त से लाल हो गयी। शोक विह्वल होकर माँ पार्वती मूर्च्छित हो गयीं। भगवान् विष्णु जी की कृपा से गणेश जी को हाथी का शिर प्राप्त हुआ और उन्हें पुनः जीवन प्राप्त हो गया। परन्तु पार्वती जी ने शनि को इस भयंकर अपराध के लिए अंगहीन होने का शाप दे दिया। **"शशाप च सभामध्येऽप्यङ्गहीनो भवेति च"** जिससे क्रुद्ध होकर वहाँ उपस्थित कश्यप, सूर्य, यमादि शनि के पारिवारिक जन भी पार्वती को शाप देने के लिए उद्यत हो गये और कहने लगे कि आपके कहने पर ही शनि ने गणेश जी के दर्शन किये थे जिसमें शनि का कोई दोष नहीं। फिर आपने शनि को क्यों शाप दिया? यह उचित नहीं है, और हम भी आप को शाप देते हैं। इस अशान्त वातावरण को देखकर ब्रह्मादि सभी ने दोनों को

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समझाया। जिससे शान्त होकर पार्वती जी ने कहा कि मेरा दिया शाप तो निष्फल नहीं होगा परन्तु शनि अंगहीन के स्थान पर खञ्ज (लँगड़े) हो जायेंगे। **"शापोऽमोघस्तातो मेऽद्य किञ्चित् खञ्जो भविष्यति"** तब से आज तक शनि महाराज लँगड़ाते हुए चलकर मन्द गति रूप में जाने जाते हैं।

"ग्रहा गावो नरेन्द्राश्च ब्राह्मणाश्च विशेषतः ।
पूजिताः पूजयन्त्येतेनिर्दहन्त्यपमानिताः ॥"

अर्थात् ग्रह, गौ, राजा तथा ब्राह्मण ये पूजा, स्तुति से ही प्रसन्न होते हैं और इनमें अनास्था रखने वालों का विनाश कर देते हैं ।

प्रस्तुत पुस्तक में शनि ग्रह जनित कष्टों के निवारणार्थ महाकालशनि आदि स्तोत्रों का संग्रह, वेद एवं तन्त्रोक्त शनि मन्त्र के जप की विधि दी गयी है । आशा है सभी धर्म प्रेमी सज्जन इससे लाभान्वित होंगे ।

आचार्य गणेश शुक्लः
भारतीय विद्याविद्

वैशाखी २०६४

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अनुक्रमणिका

विषयः	पृष्ठ संख्या
भूमिका	३
महाकालशनिमृत्युञ्जयस्तोत्रम् (मार्त्तण्डभैरवतन्त्रोक्तम्)	७
अथ दशरथकृतशनिस्तोत्रम्	२५
शनैश्चरस्तवराजः	४६
शनिस्तोत्रम् (ब्रह्माण्डपुराणोक्तम्)	५१
शनिवज्रपञ्जरकवचम्	५५
तन्त्रसारोक्तं-शनिमन्त्रजप-विधानम्	५८
वेदतन्त्रपुराणोक्तं शनिमन्त्रानुष्ठानम्	६०
पुराणोक्तशनि एवं शनिगायत्रीमन्त्रः	६१

विषयः	पृष्ठ संख्या
रत्नधारण विधि	६१
धारणार्थ औषधि	६२
श्रीशनिदेव के दस नाम	६२
शन्यष्टोत्तरशतनामावलिः	६३
शनि चालीसा	६८
भगवान् शनिदेव की आरती	७३
शनिवार के दिन करने योग्य कार्य	७५
शनिवार के दिन वर्जित कार्य	७६
शनिदान सामग्री	७७
पूजा सामग्री	७८

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

मार्त्तण्डभैरवतन्त्रोक्तम्

महाकालशनिमृत्युञ्जयस्तोत्रम्

ॐ शनैश्चराय नमः

नीलाद्रिशोभाञ्चितदिव्यमूर्तिः
खड्गी त्रिदण्डी शरचापहस्तः ।
शम्भुर्महाकालशनिः पुरारि-
र्जयत्यशेषासुरनाशकारी ॥१॥
मेरुपृष्ठे समासीनं सामरस्ये स्थितं शिवम् ।
प्रणम्य शिरसा गौरी पृच्छति स्म जगद्धितम् ॥२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पार्वत्युवाच

भगवन् ! देवदेवेश ! भक्तानुग्रहकारक ! ।
अल्पमृत्युविनाशाय यत्त्वया पूर्वसूचितम् ॥३॥
तदेव त्वं महाबाहो ! लोकानां हितकारकम् ।
तव मूर्तिप्रभेदस्य महाकालस्य साम्प्रतम् ॥४॥
शनेर्मृत्युञ्जय स्तोत्रम् ब्रूहि मे नेत्रजन्मनः ।
अकालमृत्युहरणमपमृत्युनिवारणम् ॥५॥
शनिमन्त्रप्रभेदा ये तैर्युक्तं यत्स्तवं शुभम् ।
प्रतिनाम चतुर्थ्यन्तं नमोऽन्तं मनुना युतम् ॥६॥

ईश्वर उवाच

नित्ये प्रियतमे गौरि सर्वलोकहिते रते ।
गुह्याद् गुह्यतमं दिव्यं सर्वलोकोपकारकम् ॥७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शनिमृत्युञ्जयस्तोत्रं प्रवक्ष्यामि तवाऽधुना ।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वशत्रुविमर्दनम् ॥८॥
सर्वरोगप्रशमनं सर्वापद्विनिवारणम् ।
शरीरारोग्यकरणमायुर्वृद्धिकरं नृणाम् ॥९॥
यदि भक्तासि मे गौरी गोपनीयं प्रयत्नतः ।
गोपितं सर्वतन्त्रेषु तच्छृणुष्व महेश्वरि ! ॥१०॥

विनियोगः ॐ अस्य श्रीमहाकालशनिमृत्युञ्जयस्तोत्रस्य पिप्पलाद ऋषिरनुष्टुप्छन्दो महाकालशनिर्देवता शं बीजम् आयसी शक्तिः कालपुरुषाय इति कीलकं मम अकाल-अपमृत्युनिवारणार्थं पाठे विनियोगः।

ऋषिन्यासं करन्यासं देहन्यासं समाचरेत् ।
महोग्रं मूर्ध्नि विन्यस्य मुखे वैवस्वतं न्यसेत् ॥११॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गले तु विन्यसेन्मन्दं बाह्वोर्महाग्रहं न्यसेत् ।
हृदि न्यसेत्महाकालं गुह्ये कृशतनुं न्यसेत् ॥१२॥
जान्वो स्तूडुचरं न्यस्य पादयोस्तु शनैश्चरम् ।
एवं न्यासविधिं कृत्वा पश्चात्कालात्मनः शनेः ॥१३॥
न्यासं ध्यानं प्रवक्ष्यामि तनौ ध्यात्वा पठेन्नरः ।
कल्पादियुगभेदांश्च कराङ्गन्यासरूपिणः ॥१४॥
कालात्मनो न्यसेद् गात्रे मृत्युञ्जय! नमोऽस्तुते ।
मन्वन्तराणि सर्वाणि महाकालस्वरूपिणः ॥१५॥
भावयेत्प्रति प्रत्यङ्गे महाकालाय ते नमः ।
भावयेत्प्रभवाद्यब्दान् शीर्षे कालजिते नमः ॥१६॥
नमस्ते नित्यसेव्याय विन्यसेदयने भ्रुवोः ।
सौरये च नमस्तेऽस्तु गण्डयोर्विन्यसेदृतून् ॥१७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रावणं भावयेदक्ष्णोर्नमः कृष्णनिभाय च ।
महोग्राय नमो भाद्रं तथा श्रवणयोर्न्यसेत् ॥१८॥
नमो वै दुर्निरीक्ष्याय चाशिवनं विन्यसेन्मुखे ।
नमो नीलमयूखाय ग्रीवायां कार्तिकं न्यसेत् ॥१९॥
मार्गशीर्षं न्यसेद् बाह्वोर्महारौद्राय ते नमः ।
ऊर्ध्वलोकनिवासाय पौषं तु हृदये न्यसेत् ॥२०॥
नमः कालप्रबोधाय माघं वै चोदरे न्यसेत् ।
मन्दगाय नमो मेढ्रे न्यसेद्वै फाल्गुनं तथा ॥२१॥
ऊर्वोर्न्यसेच्चैत्रमासं नमः शिवोद्भवाय च ।
वैशाखं विन्यसेज्जान्वोर्नमः संवर्त्तकाय च ॥२२॥
जङ्घयोर्भावयेज्ज्येष्ठं भैरवाय नमस्तथा ।
आषाढं पादयोश्चैव शनये च नमस्तथा ॥२३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कृष्णपक्षं च क्रूराय नमः आपादमस्तके ।
न्यसेदाशीर्षपादान्ते शुक्लपक्षं ग्रहाय च ॥२४॥
न्यसेन्मूलं पादयोश्च ग्रहाय शनये नमः ।
नमः सर्वजिते चैव तोयं सर्वांगुलौ न्यसेत् ॥२५॥
न्यसेद्गुल्फद्वये विश्वं नमः शुष्कतराय च ।
विष्णुभं भावयेज्जङ्घोर्भये शिष्टतमाय ते ॥२६॥
जानुद्वये धनिष्ठां च न्यसेत्कृष्णरुचे नमः ।
ऊरुद्वये वारुणर्क्षं न्यसेत्कालभृते नमः ॥२७॥
पूर्वभाद्रं न्यसेन्मेढ्रे जटाजूटधराय च ।
पृष्ठे उत्तरभाद्रं च करालाय नमस्तथा ॥२८॥
रेवतीं च न्यसेन्नाभौ नमो मन्दचराय च ।
गर्भदेशे न्यसेदस्त्रं नमः श्यामतराय च ॥२९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमो भोगिस्त्रजे नित्यं यमं स्तनयुगे न्यसेत् ।
न्यसेत्कृत्तिकां हृदये नमस्तैल प्रियाय च ॥३०॥
रोहिणीं भावयेद्धस्ते नमस्ते खड्गधारिणे ।
मृगं न्यसेद्वामहस्ते त्रिदण्डोल्लसिताय च ॥३१॥
दक्षोर्ध्वे भावयेद्रौद्रं नमो वै बाणधारिणे ।
पुनर्वसुमूर्ध्ववामे नमो वै चापधारिणे ॥३२॥
तिष्यं न्यसेद्दक्षबाहौ नमस्ते हरमन्यवे ।
सार्पं न्यसेद्वामबाहौ चोग्रचापाय ते नमः ॥३३॥
मघां विभावयेत्कण्ठे नमस्ते भस्मधारिणे ।
मुखे न्यसेद्भगर्क्षं च नमः क्रूरग्रहाय च ॥३४॥
भावयेद्दक्षनासायामर्यमाणञ्च योगिने ।
भावयेद्वामनासायां हस्तर्क्षं धारिणे नमः ॥३५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्वाष्ट्रं न्यसेद्दक्षकर्णे कृसरान्न प्रियाय ते ।
स्वातीं न्यसेद्वामकर्णे नमो ब्रह्ममयाय ते ॥३६॥
विशाखां च दक्षनेत्रे नमस्ते ज्ञानदृष्टये ।
विष्कुम्भं भावयेच्छीर्षे सन्धौ कालायते नमः ॥३७॥
प्रीतियोगं भ्रुवोः सन्धौ महामन्द! नमोऽस्तुते ।
नेत्रयोः सन्धावायुष्मद्योगं भीष्माय ते नमः ॥३८॥
सौभाग्यं भावयेन्नासासन्धौ फलाशनाय च ।
शोभनं भावयेत्कर्णे सन्धौ पुण्यात्मने नमः ॥३९॥
नमः कृष्णायातिगण्डं हनुसन्धौ विभावयेत् ।
नमो निर्मांसदेहाय सुकर्माणं शिरोधरे ॥४०॥
धृतिं न्यसेद्दक्षबाहौ पृष्ठे छायासुताय च ।
तन्मूलसन्धौ शूलं च न्यसेदुग्राय ते नमः ॥४१॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तत्कूर्परं न्यसेद् गण्डे नित्यानन्दाय ते नमः ।
वृद्धिं तन्मणिबन्धे च कालज्ञाय नमो न्यसेत् ॥४२॥
ध्रुवं तदंगुलीमूलसन्धौ कृष्णाय ते नमः ।
व्याघातं भावयेद्वामबाहुपृष्ठे कृशाय च ॥४३॥
हर्षणं तन्मूलसन्धौ भूतसन्तापिने नमः ।
तत्कूर्परं न्यसेद्वज्रं सानन्दाय नमोऽस्तुते ॥४४॥
सिद्धिं तन्मणिबन्धे च न्यसेत्कालाग्नये नमः ।
व्यतीपातं कराग्रेषु न्यसेत्कालकृते नमः ॥४५॥
वरीयांसं दक्षपार्श्वसन्धौ कालात्मने नमः ।
परिघं भावयेद्वामपार्श्वसन्धौ नमोऽस्तुते ॥४६॥
न्यसेद्दक्षोरुसन्धौ च शिवं वै कालसाक्षिणे ।
तज्जानौ भावयेत्सिद्धिं महादेवाय ते नमः ॥४७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

साध्यं न्यसेच्च तद्गुल्फसन्धौ घोराय ते नमः ।
न्यसेत्तदङ्गुलीसन्धौ शुभं रौद्राय ते नमः ॥४८॥
न्यसेद्वामोरुसन्धौ च शुक्लकालविदे नमः ।
ब्रह्मयोगं च तज्जानौ न्यसेत्सद्योगिने नमः ॥४९॥
ऐन्द्रन्तद्गुल्फसन्धौ च योगाऽधीशाय ते नमः ।
न्यसेत् तदंगुलीसन्धौ नमो भव्याय वैधृतिम् ॥५०॥
चर्मणि वै बवकरणं च भावयेद्यज्वने नमः ।
बालवं भावयेद्रक्ते संहारक! नमोऽस्तुते ॥५१॥
कौलवं भावयेदस्थ्नि नमस्ते सर्वभक्षिणे ।
तैतिलं भावयेन्मांसे आममांसप्रियाय ते ॥५२॥
गरं न्यसेद्वपायां च सर्वग्रासाय ते नमः ।
न्यसेद्वणिजं मज्जायां सर्वान्तक! नमोऽस्तुते ॥५३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वीर्ये विभावयेद्विष्टिं नमो मन्यूग्रतेजसे ।
रुद्रमित्र पितृवसुवारीण्येतांश्च पञ्च च ॥५४॥
मुहूर्तांश्च दक्षपादनखेषु भावयेन्नमः ।
खगेशाय च खस्थाय खेचराय स्वरूपिणे ॥५५॥
पुरुहूतशतमखे विश्ववेधो विधूंस्तथा ।
मुहूर्त्तांश्च वामपादनखेषु भावयेन्नमः ॥५६॥
सत्यव्रताय सत्याय नित्यं सत्याय ते नमः ।
सिद्धेश्वर! नमस्तुभ्यं योगेश्वर नमोऽस्तु ते ॥५७॥
वह्निनक्तंचरांश्चैव वरुणार्यमयो निकान् ।
मुहूर्तांश्च दक्षहस्त-नखेषु भावयेन्नमः ॥५८॥
लग्नोदयाय दीर्घाय मार्गिणे दक्षदृष्टये ।
वक्राय चातिक्रूराय नमस्ते वामदृष्टये ॥५९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वामहस्तनखेष्वन्त्य वर्णेशाय नमोऽस्तुते ।
गिरिशाहिर्बुध्न्यपूषा जपाद्दस्नांश्च भावयेत् ॥६०॥
राशिभोक्त्रे राशिगाय राशिभ्रमण कारिणे ।
राशिनाथाय राशीनां फलदात्रे नमोऽस्तु ते ॥६१॥
यमाग्निचन्द्रादितिजविधातृंश्च विभावयेत् ।
ऊर्ध्वहस्तदक्षनखेष्वन्त्यकालायते नमः ॥६२॥
तुलोच्चस्थाय सौम्याय नक्रकुम्भगृहाय च ।
समीरत्वष्टृजीवांश्च विष्णुतिग्मद्युतीन्न्यसेत् ॥६३॥
ऊर्ध्ववामहस्तनखेष्वन्यग्रहनिवारणे ।
तुष्टाय च वरिष्ठाय नमो राहुसखाय च ॥६४॥
रविवारं ललाटे च न्यसेद्ध्रीमदृशे नमः ।
सोमवारं न्यसेदास्ये नमोऽमृतप्रियाय च ॥६५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भौमवारं न्यसेत्स्वान्ते नमो ब्रह्मस्वरूपिणे ।
मेढ्रे न्यसेत्सौम्यवारं नमो जीवस्वरूपिणे ॥६६॥
वृषणे गुरुवारं च नमो मन्त्रस्वरूपिणे ।
भृगुवारं मलद्वारे नमः प्रलय कारिणे ॥६७॥
पादयोः शनिवारं च निर्मांसाय नमोऽस्तु ते ।
घटिकां न्यसेत्केशेषु नमस्ते सूक्ष्मरूपिणे ॥६८॥
काल रूपिन्नमस्तेऽस्तु सर्वपापप्रणाशकः ।
त्रिपुरस्य वधार्थाय शम्भुजाताय ते नमः ॥६९॥
नमः कालशरीराय कालनुन्नाय ते नमः ।
कालहेतो! नमस्तुभ्यं कालनन्दाय वै नमः ॥७०॥
अखण्डदण्डमानाय त्वनाद्यन्ताय वै नमः ।
कालदेवाय कालाय कालकालाय ते नमः ॥७१॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

निमेषादिमहाकल्पकालरूपं च भैरवम् ।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥७२॥
दातारं सर्वभव्यानां भक्तानामभयंकरम् ।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥७३॥
कर्त्तारं सर्वदुःखानां दुष्टानां भयवर्धनम् ।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥७४॥
हर्त्तारं ग्रहजातानां फलानामघकारिणाम् ।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥७५॥
सर्वेषामेव भूतानां सुखदं शान्तिमव्ययम् ।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥७६॥
कारणं सुखदुःखानां भावाभावस्वरूपिणम् ।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥७७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अकालमृत्युहरणमपमृत्युनिवारणम् ।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥७८॥
कालरूपेण संसारं भक्षयन्तं महाग्रहम् ।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥७९॥
दुर्निरीक्ष्यं स्थूलरोमं भीषणं दीर्घलोचनम् ।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥८०॥
ग्रहाणां ग्रहभूतं च सर्वग्रहनिवारणम् ।
मृत्युञ्जयं महाकालं नमस्यामि शनैश्चरम् ॥८१॥
कालस्य वशगाः सर्वे न कालः कस्यचिद्वशः ।
तस्मात्त्वां कालपुरुषं प्रणतोऽस्मि शनैश्चरम् ॥८२॥
कालदेव जगत्सर्वं काल एव विलीयते ।
कालरूपः स्वयं शम्भुः कालात्मा ग्रहदेवता ॥८३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चण्डीशो रुद्रडाकिन्याक्रान्तश्चण्डीश उच्यते ।
विद्युदाकलितो नद्यां समारूढो रसाधिपः ॥८४॥
चण्डीशः शुकसंयुक्तो जिह्वया ललितः पुनः ।
क्षतजस्तामसी शोभी स्थिरात्मा विद्युता युतः ॥८५॥
नमोऽन्तो मनुरित्येष शनितुष्टिकरः शिवे ।
आद्यन्तेऽष्टोत्तरशतं मनुमेनं जपेन्नरः ॥८६॥
यः पठेच्छृणुयाद्वापि ध्यात्वा संपूज्य भक्तितः ।
तस्य मृत्योर्भयं नैव शतवर्षावधिप्रिये! ॥८७॥
ज्वराः सर्वे विनश्यन्ति दद्रुविस्फोटकच्छुकाः ।
दिवा सौरिं स्मरेद्रात्रौ महाकालं यजन् पठेत् ॥८८॥
जन्मर्क्षे च यदा सौरिर्जपेदेतत् सहस्रकम् ।
वेधगे वामवेधे वा जपेदर्द्धसहस्रकम् ॥८९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

द्वितीये द्वादशे मन्दे तनौ वा चाष्टमेऽपि वा ।
तत्तद्राशौ भवेद्यावत् पठेत् तावद्दिनावधि ॥९०॥
चतुर्थे दशमे वाऽपि सप्तमे नवपञ्चमे ।
गोचरे जन्मलग्नेशे दशास्वन्तर्दशासु च ॥९१॥
गुरुलाघवज्ञानेन पठेदावृत्तिसंख्यया ।
शतमेकं त्रयं वाऽथ शतयुग्मं कदाचन ॥९२॥
आपदस्तस्यनश्यन्ति पापानि च जयं भवेत् ।
महाकालालये पीठे ह्यथवा जलसन्निधौ ॥९३॥
पुण्यक्षेत्रेऽश्वत्थमूले तैलकुम्भाग्रतो गृहे ।
नियमेनैकभक्तेन ब्रह्मचर्येण मौनिना ॥९४॥
श्रोतव्यं पठितव्यं च साधकानां सुखावहम् ।
परं स्वस्त्ययनं पुण्यं स्तोत्रं मृत्युञ्जयाभिधम् ॥९५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कालक्रमेण कथितं न्यासक्रमसमन्वितम् ।
प्रात:कालेशुचिर्भूत्वा पूजायां च निशामुखे ॥९६॥
पठतां नैव दुष्टेभ्यो व्याघ्रसर्पादितो भयम् ।
नाग्नितो न जलाद्वायोर्देशे देशान्तरेऽथवा ॥९७॥
नाऽकाले मरणं तेषां नाऽपमृत्युभयं भवेत् ।
आयुर्वर्षशतं साग्रं भवन्ति चिरजीविन: ॥९८॥
नाऽत: परतरं स्तोत्रं शनितुष्टिकरं महत् ।
शान्तिकं शीघ्रफलदं स्तोत्रमेतन्मयोदितम् ॥९९॥
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन यदीच्छेदात्मनो हितम् ।
कथनीयं महादेवि! नैवाभक्तस्य कस्यचित् ॥१००॥

॥ *श्रीमार्त्तण्डभैरवतन्त्रे महाकालशनिमृत्युञ्जयस्तोत्रम् सम्पूर्णम्* ॥

*****

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ दशरथकृतशनिस्तोत्रम्

विनियोगः ॐ अस्य श्रीशनिस्तोत्रमन्त्रस्य कश्यपऋषिस्त्रिष्टुपछन्दः, सौरिर्देवता, शं बीजम् निः शक्तिः, कृष्णवर्णेति कीलकम् धर्मार्थकाम-मोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

दाहिने हाथ में जल तथा थोड़े से साबुत चावल लेकर **ॐ अस्य श्रीशनिस्तोत्रमन्त्रस्य** से **जपे विनियोगः** तक पढ़कर जल छोड़ दें । फिर न्यास करें ।

करन्यासः शनैश्चराय अंगुष्ठाभ्यां नमः । मन्दगतये तर्जनीभ्यां नमः। अधोक्षजाय मध्यमाभ्यां नमः । कृष्णांगाय अनामिकाभ्यां नमः । शुष्कोदराय कनिष्ठकाभ्यां नमः। छायात्मजाय करतल करपृष्ठाभ्यां नमः । न्यास बोलते समय जिन-जिन अंगों का नाम आए उनको स्पर्श करते रहें।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हृदयादिन्यासः शनैश्चराय हृदयाय नमः । मन्द गतये शिरसे स्वाहा। अधोक्षजाय शिखायै वषट् । कृष्णांगाय कवचाय हुम् । शुष्कोदराय नेत्रत्रयाय वौषट् । छायात्मजाय अस्त्राय फट् । 'अस्त्राय फट्' कहकर बाईं हथेली पर सीधे हाथ ताली बजाकर फट् की ध्वनि निकालो ।

दिग्बन्धनम् 'ॐ भूर्भुवः स्वः' पढ़कर चारों दिशाओं में चुटकी बजाएं।

ध्यानम्

नीलद्युतिशूलधरं किरीटिनं गृध्रस्थितं त्रासकरं धनुर्धरम् ।
चतुर्भुजं सूर्यसुतं प्रशान्तं वन्दे सदाऽभीष्टकरं वरेण्यम् ॥

अर्थात् नीलम के समान कान्तिमान्, हाथों में धनुष और शूल धारण करने वाले, मुकुटधारी, गिद्ध पर विराजमान्, शत्रुओं को भयभीत करने वाले, चार भुजाधारी, शान्त वर को देने वाले, सदा भक्तों के हितकारक, सूर्यपुत्र को मैं प्रणाम करता हूँ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कथा

रघुवंशेषु विख्यातो राजा दशरथः पुरा ।
चक्रवर्ती स विज्ञेयः सप्तद्वीपाधिपोऽभवत् ॥१॥
कृत्तिकान्ते शनिं ज्ञात्वा दैवज्ञैर्ज्ञापितो हि सः ।
रोहिणीं भेदयित्वा तु शनिर्यास्यति साम्प्रतम् ॥२॥
शकटं भेद्यमित्युक्तं सुरासुरभयंकरम् ।
द्वादशाब्दं तु दुर्भिक्षे भविष्यति सुदारुणम् ॥३॥
एतच्छ्रुत्वा तु तद्वाक्यं मन्त्रिभिः सह पार्थिव ।
व्याकुलं च जगद्दृष्ट्वा पौरजानपदादिकम् ॥४॥
ब्रुवन्ति सर्वलोकाश्च भयमेतत्समागतम् ।
देशाश्च नगरग्रामा भयभीताः समागताः ॥५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पप्रच्छ प्रयतो राजा वसिष्ठप्रमुखान्द्विजान् ।
समाधानं किमत्राऽस्ति ब्रूहि मे द्विजसत्तम ॥६॥

प्राचीन काल में रघुवंश में दशरथ नामक प्रसिद्ध चक्रवर्ती राजा हुए जो सातों द्वीपों के स्वामी थे । उनके राज्यकाल में एक दिन ज्योतिषियों ने शनि को कृत्तिका के अन्तिम चरण में देखकर राजा से कहा कि यह शनि रोहिणी का भेदन कर जाएगा। इसको रोहिणी शकट भेदन कहते हैं । यह योग देवता और असुर दोनों ही के लिए भयप्रद होता है तथा इसके पश्चात् बारह वर्ष का घोर दुःखदायी अकाल पड़ता है। ज्योतिषियों की यह बात मन्त्रियों के साथ राजा ने सुनी, इसके साथ ही नगर और जनपद वासियों को बहुत व्याकुल देखा । उस समय नगर और ग्रामों के निवासी भयभीत होकर राजा से इस विपत्ति से रक्षा की प्रार्थना करने लगे । अपने प्रजाजनों की व्याकुलता को देखकर राजा दशरथ वशिष्ठ ऋषि तथा प्रमुख ब्राह्मणों से कहने लगे– "हे श्रेष्ठ ब्राह्मणों ! इस समस्या का कोई समाधान मुझे बताइए" ॥१-६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्राजापत्ये तु नक्षत्रे तस्मिन् भिन्ने कुतः प्रजाः ।
अयं योगो ह्यसाध्यश्च ब्रह्मशक्रादिभिः सुरैः ॥७॥

इस पर वशिष्ठ जी कहने लगे– प्रजापति के इस नक्षत्र [रोहिणी] में यदि शनि का शकट भेदन होता है तो प्रजा जन सुखी कैसे रह सकते हैं । इस योग के दुष्प्रभाव से तो ब्रह्मा एवं इन्द्रादि देवता के द्वारा भी रक्षा करना बहुत कठिन हैं ॥७॥

तदा सञ्चिन्त्य मनसा साहसं परमं ययौ ।
समाधाय धनुर्दिव्यं दिव्यायुधसमन्वितम् ॥८॥
रथमारुह्य वेगेन गतो नक्षत्रमण्डलम् ।
त्रिलक्षयोजनं स्थानं चन्द्रस्योपरिसंस्थितम् ॥९॥
रोहिणीपृष्ठमासाद्य स्थितो राजा महाबलः ।
रथे तु काञ्चने दिव्ये मणिरत्नविभूषिते ॥१०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हंसवर्णहयैर्युक्ते महाकेतुसमुच्छ्रिते ।
दीप्यमानो महारत्नैः किरीटमुकुटोज्वलैः ॥११॥
व्यराजत तदाकाशे द्वितीय इव भास्करः ।
आकर्णचापमाकृष्य सहस्त्रं विनियोजितम् ॥१२॥
कृत्तिकान्तं शनिर्ज्ञात्वा प्रविशतां च रोहिणीम् ।
दृष्ट्वा दशरथञ्चाग्रे तस्थौ तु भृकुटीमुखः ॥१३॥
संहारास्त्रं शनिर्दृष्ट्वा सुराऽसुर निषूदनम् ।
प्रहस्य च भयात् सौरिरिदं वचनमब्रवीत् ॥१४॥

विद्वानों के यह वचन सुनकर राजा को ऐसा प्रतीत हुआ कि यदि वे इस संकट की घड़ी को टाल न सके तो उन्हें कायर कहा जाएगा । अतः राजा विचार करकें साहस बटोरकर दिव्य धनुष तथा दिव्य आयुधों से युक्त होकर रथ को तीव्र गति से चलाते हुए चन्द्रमा से भी तीन लाख योजन ऊपर नक्षत्र मण्डल में ले गए । मणियों

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तथा रत्नों से सुशोभित स्वर्ण निर्मित रथ में बैठे हुए महाबली राजा ने राहिणी के पीछे आकर रथ को रोक दिया । सफेद घोड़ों से युक्त और ऊँची-ऊँची ध्वजाओं से सुशोभित मुकुट में जड़े हुए बहुमूल्य रत्नों से प्रकाशमान राजा दशरथ उस समय आकाश में दूसरे सूर्य की भांति चमक रहे थे । शनि को कृत्तिका नक्षत्र के पश्चात् रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश करने का इच्छुक देखकर राजा दशरथ बाण युक्त धनुष कानों तक खींचकर भृकुटियां तानकर शनि के सामने डटकर खड़े हो गये । अपने आगे देव असुरों के संहारक अस्त्रों से युक्त दशरथ को खड़ा देखकर शनि थोड़ा डर गया और हंसते हुए राजा से कहने लगा ।।८-१४।।

शनि उवाच

पौरुषं तव राजेन्द्र! मया दृष्टं न कस्यचित् ।
देवासुरमनुष्याश्च सिद्धविद्याधरोरगाः ।।१५।।
मया विलोकिताः सर्वे भयं गच्छन्ति तत्क्षणात् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तुष्टोऽहं तव राजेन्द्र! तपसा पौरुषेण च ॥१६॥
वरं ब्रूहि प्रदास्यामि स्वेच्छया रघुनन्दन! ।

शनि कहने लगा– हे राजेन्द्र! तुम्हारे जैसा पुरुषार्थ मैंने किसी में नहीं देखा क्योंकि देवता, असुर, मनुष्य, सिद्ध, विद्याधर और सर्प जाति के जीव मेरे देखने मात्र से ही भयभीत हो जाते हैं । हे राजेन्द्र! मैं तुम्हारी तपस्या और पुरुषार्थ से अत्यन्त प्रसन्न हूँ। अतः हे रघुनन्दन! जो तुम्हारी इच्छा हो वर मांग लो, मैं तुम्हें दूंगा ॥१५-१६॥

दशरथ उवाच

प्रसन्नो यदि मे सौरे! एकश्चास्तु वरः परः ॥१७॥
रोहिणीं भेदयित्वा तु न गन्तव्यं कदाचन ।
सरितः सागरा यावद्यावच्चन्द्रार्कमेदिनी ॥१८॥
याचितं तु महासौरे! नाऽन्यमिच्छाम्यहं वरम् ।
एवमस्तुशनिप्रोक्तं वरं लब्ध्वा तु शाश्वतम् ॥१९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्राप्यैवं तु वरं राजा कृतकृत्योऽभवत्तदा ।
पुनरेवाऽब्रवीत् तुष्टो वरं परमसुव्रत! ॥२०॥

दशरथ बोले- हे सूर्य पुत्र शनि देव! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मैं केवल एक ही वर मांगता हूँ और वह यह कि जब तक नदियां, सागर, चन्द्रमा, सूर्य और पृथ्वी इस संसार में हैं तब तक आप रोहिणी शकट का भेदन कदापि न करें। मैं केवल यही वर मांगता हूँ और मेरी कोई इच्छा नहीं हैं। तब शनि ने 'एवमस्तु' कहकर वर दे दिया। इस प्रकार शनि से वर प्राप्त करके राजा अपने को धन्य समझने लगा। तब शनि ने कहा मैं तुमसे परम प्रसन्न हूँ, तुम और भी वर मांग लो ॥१७-२०॥

प्रार्थयामास हृष्टात्मा वरमन्यं शनिं तदा ।
न भेत्तव्यं न भेत्तव्यं त्वया भास्करनन्दन ॥२१॥
द्वादशाब्दं तु दुर्भिक्षं न कर्त्तव्यं कदाचन ।
कीर्तिरिषा मदीया च त्रैलोक्ये तु भविष्यति ॥२२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एवं वरं तु सम्प्राप्य हृष्टरोमा स पार्थिवः ।
रथोपरिधनुः स्थाप्यभूत्वाचैव कृताञ्जलिः ॥२३॥
ध्यात्वा सरस्वतीं देवीं गणनाथं विनायकम् ।
राजा दशरथः स्तोत्रं सौरेरिदमथाऽकरोत् ॥२४॥

तब राजा ने प्रसन्न होकर शनि से दूसरा वर मांगा । तब शनि कहने लगे- हे सूर्य वंशियों के पुत्र तुम निर्भय रहो, निर्भय रहो । बारह वर्ष तक तुम्हारे राज्य में अकाल नहीं पड़ेगा । तुम्हारी यश कीर्ति तीनों लोकों में फैलेगी । ऐसा वर पाकर राजा प्रसन्न होकर धनुष बाण रथ में रखकर हाथ जोड़कर सरस्वती देवी तथा गणपति का ध्यान करके शनि की स्तुति इस प्रकार करने लगे ॥२१-२४॥

नमः कृष्णाय नीलाय शितिकण्ठनिभाय च ।
नमः कालाग्निरूपाय कृतान्ताय च वै नमः ॥२५॥

जिनके शरीर का वर्ण कृष्ण नील तथा भगवान् शंकर के समान है, उन शनि देव

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

को नमस्कार है । जो जगत् के लिए कालाग्नि एवं कृतान्त रूप हैं, उन शनैश्चर को बार-बार नमस्कार है ॥२५॥

नमो निर्मांसदेहाय दीर्घश्मश्रुजटाय च ।
नमो विशालनेत्राय शुष्कोदरभयाकृते ॥२६॥

जिनका शरीर कंकाल जैसा मांसहीन तथा जिनकी दाढ़ी- मूंछ और जटा बढ़ी हुई है, उन शनि देव को नमस्कार है । जिनके बड़े-बड़े नेत्र, पीठ में सटा हुआ पेट और भयानक आकार है उन शनैश्चर देव को नमस्कार है ॥२६॥

नमः पुष्कलगात्राय स्थूलरोम्णेऽथ वै नमः ।
नमो दीर्घाय शुष्काय कालदंष्ट्र नमोऽस्तुते ॥२७॥

जिनके शरीर का ढाँचा फैला हुआ है, जिनके रोएं बहुत मोटे हैं, जो लम्बे-चौड़े किन्तु सूखे शरीर वाले हैं तथा जिनकी दाढ़ें काल रूप हैं, उन शनि देव को बार-बार प्रणाम है ॥२७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमस्ते कोटराक्षाय दुर्निरीक्ष्याय वै नमः ।
नमो घोराय रौद्राय भीषणाय कपालिने ॥२८॥

शने! आपके नेत्र कोटर के समान गहरे हैं, आपकी ओर देखना कठिन है, आप घोर रौद्र, भीषण और विकराल हैं, आपको नमस्कार है ॥२८॥

नमस्ते सर्वभक्षाय बलीमुख नमोऽस्तुते ।
सूर्यपुत्र नमस्तेऽस्तु भास्करेऽभयदाय च ॥२९॥

बलीमुख! आप सब कुछ भक्षण करने वाले हैं, आपको नमस्कार है। सूर्यनन्दन! भास्करपुत्र! अभय देने वाले देवता! आपको प्रंणाम है ॥२९॥

अधोदृष्टे नमस्तेऽस्तु संवर्तक नमोऽस्तुते ।
नमो मन्दगते तुभ्यं निस्त्रिंशाय नमोऽस्तुते ॥३०॥

नीचे की ओर दृष्टि रखने वाले शनि देव! आपकौ नमस्कार है! संवर्तक! आपको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.
प्रणाम है । मंद गति से चलने वाले शनैश्चर! आपका प्रतीक तलवार के समान है, आपको पुनः-पुनः प्रणाम है ॥३०॥

तपसा दग्धदेहाय नित्यं योगरताय च ।
नमो नित्यं क्षुधार्ताय अतृप्ताय च वै नमः ॥३१॥

आपने तपस्या से अपनी देह को दग्ध कर लिया है, आप सदा योगाभ्यास में तत्पर, भूख से आतुर और अतृप्त रहते हैं । आपको सदा सर्वदा नमस्कार है ॥३१॥

ज्ञानचक्षुर्नमस्तेऽस्तु काश्यपात्मजसूनवे ।
तुष्टो ददासि वै राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात् ॥३२॥

ज्ञान नेत्र आपको प्रणाम है । काश्यपनन्दन सूर्यपुत्र शनिदेव आपको नमस्कार है। आप सन्तुष्ट होने पर राज्य दे देते हैं और रुष्ट होने पर उसे उसी क्षण हर लेते हैं ॥३२॥

देवासुरमनुष्याश्च सिद्धविद्याधरोरगाः ।
त्वया विलोकिताः सर्वे नाशं यान्ति समूलतः ॥३३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देवता, असुर, मनुष्य, सिद्ध, विद्याधर और नाग ये सब आपकी दृष्टि पड़ने पर समूल नष्ट हो जाते हैं ।।३३।।

प्रसादं मे कुरु सौरे! वरदो भव भास्कर ।।३४।।

देव मुझ पर प्रसन्न होइये । मैं वर पाने के योग्य हूँ और आपकी शरण में आया हूँ ।।३४।।

एवं स्तुतस्तदा सौरिर्ग्रहराजो महाबलः ।
अब्रवीच्च शनिर्वाक्यं हृष्टरोमा च पार्थिवः ।।३५।।
तुष्टोऽहं तव राजेन्द्र! स्तोत्रेणाऽनेन सुव्रत ।
एवं वरं प्रदास्यामि यत्ते मनसि वर्तते ।।३६।।

राजा दशरथ के इस प्रकार प्रार्थना करने पर ग्रहों के राजा महाबली सूर्य पुत्र शनैश्चर बोले- उत्तम व्रत के पालक राजा दशरथ! तुम्हारी इस स्तुति से मैं अत्यन्त सन्तुष्ट हूँ । रघुनन्दन तुम इच्छानुसार वर मांगो, मैं अवश्य दूंगा ।।३५-३६।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दशरथ उवाच

प्रसन्नो यदि मे सौरे! वरं देहि ममेप्सितम् ।
अद्य प्रभृति पिंगाक्ष! पीडा देया न कस्यचित् ॥३७॥
प्रसादं कुरु मे सौरे! वरोऽयं मे मयेप्सितः ।

राजा दशरथ बोले–प्रभु आज से आप देवता, असुर, मनुष्य, पशु, पक्षी तथा नाग किसी भी प्राणी को पीड़ा न दें । बस यही मेरा प्रिय वर है ॥३७॥

शनि उवाच

अदेयस्तु वरोस्माकं तुष्टोऽहं च ददामि ते ॥३८॥
त्वया प्रोक्तं च मे स्तोत्रं ये पठिष्यन्ति मानवाः ।
देवासुर-मनुष्याश्च सिद्धविद्याधरोरगाः ॥३९॥
न तेषां बाधते पीडा मत्कृता वै कदाचन ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मृत्युस्थाने चतुर्थे वा जन्म-व्यय-द्वितीयगे ॥४०॥
गोचरे जन्मकाले वा दशास्वन्तर्दशासु च ।
यः पठेद्द्वित्रिसन्ध्यं वा शुचिर्भूत्वा समाहितः ॥४१॥
न तस्य जायते पीडा कृता वै मम निश्चितम् ।

शनि देव ने कहा- हे राजन! यद्यपि ऐसा वर मैं किसी को देता नहीं हूँ परन्तु सन्तुष्ट होने के कारण तुमको दे रहा हूँ। तुम्हारे द्वारा कहे गए इस स्तोत्र को जो मनुष्य, देव अथवा असुर, सिद्ध तथा विद्वान् आदि पढ़ेंगे, उन्हें शनि बाधा नहीं होगी। जिनके गोचर में महादशा या अन्तर्दशा में अथवा लग्न स्थान, द्वितीय, चतुर्थ, अष्टम अथवा द्वादश स्थान में शनि हो वे व्यक्ति यदि पवित्र होकर प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल के समय इस स्तोत्र को ध्यान देकर पढ़ेंगे उनको निश्चित रूप से मैं पीड़ित नहीं करूँगा ॥३८-४१॥

प्रतिमां लोहजां कृत्वा मम राजन् चतुर्भुजाम् ॥४२॥
वरदां च धनुः शूल-बाणांकितकरां शुभाम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अयुतमेकजप्यं च तद्दशांशेन होमतः ॥४३॥
कृष्णैस्तिलैः शमीपत्रैर्घृताक्तैर्नीलपंकजैः ।
पायसं शर्करायुक्तं घृतमिश्रं च होमयेत् ॥४४॥
ब्राह्मणान्भोजयेत्तत्र स्वशक्त्या घृतपायसैः ।
तैलं वा तैलराशौ वा प्रत्यक्षं वै यथाविधि ॥४५॥

हे राजन! जिनको मेरी कृपा प्राप्त करनी है उन्हें चाहिए कि वे मेरी लोहे की मूर्ति बनाएं, जिनकी चार भुजाएं हों और उनमें धनुष, भाला और बाण धारण किए हों। इसके पश्चात् दस हजार की संख्या में इस स्तोत्र का जप करें, जप का दशांश हवन करें, जिसकी सामग्री काले तिल, शमीपत्र, घी, नील कमल, खीर, चीनी मिलाकर बनाई जाए । इसके पश्चात् घी तथा दूध से निर्मित पदार्थों से ब्राह्मणों को भोजन कराएं। उपर्युक्त शनि की प्रतिमा को तिल के तेल या तिलों के ढेर में रखकर विधि-विधानपूर्वक ॥४२-४५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूजनं चैव मन्त्रेण कुंकुमाद्यं च लेपयेत् ।
नील्या वा कृष्णतुलसी शमीपत्रादिभिः शुभैः ॥४६॥
दद्यान्मे प्रीतये यस्तु कृष्णवस्त्रादिकं शुभम् ।
धेनुं वा वृषभं चापि सवत्सां च पयस्विनीम् ॥४७॥
एवं विशेषपूजां च मद्वारे कुरुते नृप! ।
मन्त्रोद्धारविशेषेण स्तोत्रेणानेन पूजयेत् ॥४८॥
पूजयित्वा जपेत्स्तोत्रं भूत्वा चैव कृताञ्जलिः ।
तस्य पीडां न चैवाहं करिष्यामि कदाचन ॥४९॥
रक्षामि सततं तस्य पीडां चान्यग्रहस्य च ।
अनेनैव प्रकारेण पीडामुक्तं जगद्भवेत् ॥५०॥

मन्त्र द्वारा पूजन करें, कुंकुम इत्यादि चढ़ाएं, नीली तथा काली तुलसी, शमी के पत्ते मुझे प्रसन्न करने के लिए अर्पित करें । काले रंग के वस्त्र, बैल, दूध देने वाली गाय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बछड़े सहित दान में दें । हे राजन! जो मन्त्रोद्धारपूर्वक इस स्तोत्र से मेरी पूजा करता है, पूजा करके हाथ जोड़कर इस स्तोत्र का पाठ करता है उसको मैं किसी प्रकार की पीड़ा नहीं होने दूंगा । इतना ही नहीं बल्कि अन्य ग्रहों की पीड़ा से भी मैं उसकी रक्षा करता हूँ । इस तरह अनेक प्रकार से मैं जगत को पीड़ा से मुक्त करता हूँ ।।४६-५०।।

वरद्वयं तु सम्प्राप्य राजा दशरथस्तदा ।
मत्वा कृतार्थमात्मानं नमस्कृत्य शनैश्चरम् ।।५१।।
शनैश्चराभ्यनुज्ञातो रथमारुह्य वीर्यवान् ।
स्वस्थानं च गतो राजा प्राप्तकामोऽभवत्तदा ।।५२।।
सर्वासिद्धिमवाप्याथ विजयी सर्वदाऽभवत् ।
कोणस्थःपिङ्गलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रान्तको यमः ।।५३।।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलाश्रयसंस्थितः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एतानि शनिनामानि जपेदश्वत्थसन्निधौ ॥५४॥
शनैश्चरकृता पीडा न कदाचिद्भविष्यति ।

इस प्रकार शनि से दो वर प्राप्त करके अपने को धन्य समझते हुए राजा दशरथ शनि को प्रणाम करके उनसे अनुमति लेकर रथ पर चढ़कर अपने राज्य में लौट आए और उनके सकल मनोरथ पूर्ण होते रहे । उन्हें सब प्रकार की सिद्धियां प्राप्त हुई और सदा विजयश्री ने उनका वरण किया । जो व्यक्ति शनि देवता के इन दस नामों-[१] कोणस्थ, [२] पिंगल, [३] बभ्रु, [४] कृष्ण, [५] रौद्रान्तक, [६] यम, [७] सौरि, [८] शनैश्चर, [९] मन्द और [१०] पिप्पलाश्रय संस्थित को पीपल वृक्ष के नीचे बैठकर जपेगा उसको शनि की पीड़ा कभी नहीं होगी ॥५१-५४॥

अल्पमृत्युविनाशाय दुःखस्योद्धरणाय च ॥५५॥
स्नातव्यं तिलतैलेन धान्य-माषादिकं तथा ।
लौहं देयं च विप्राय सुवर्णेन समन्वितम् ॥५६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शनिस्तोत्रं पठेद्यस्तु श्रृणुयाद्वा समाहितः ।
विजयं चार्थ कामौ च सुखमारोग्यमाप्नुयात् ॥५७॥

अकाल मृत्यु का नाश करने और कष्टों से उद्धार पाने के लिए तिल के तेल से स्नान करें । धान्य, उड़द, लोहा तथा स्वर्ण आदि का दान करें। इस शनि स्तोत्र का स्वयं पाठ करें अथवा ब्राह्मण द्वारा सुनें तो ऐसा करने से सर्वत्र अर्थ, काम, सुख और आरोग्य की प्राप्ति होती रहती है ॥५५-५७॥

॥*श्रीदशरथकृतशनिस्तोत्रम्सम्पूर्णम्*॥

❀❀❀

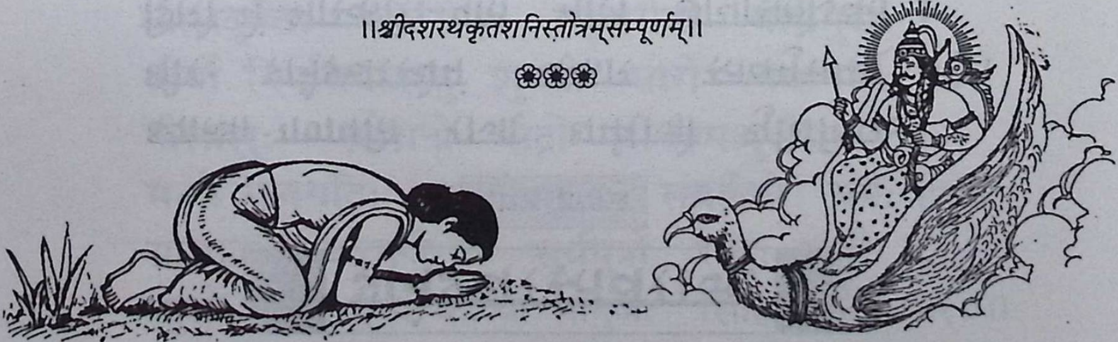

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री गणेशाय नमः

शनैश्चरस्तवराजः

नारद उवाच

ध्यात्वा गणपतिं राजा धर्मराजो युधिष्ठिरः ।
धीरः शनैश्चरस्येमं चकार स्तवमुत्तमम् ॥१॥
शिरो में भास्करिः पातु भालं छायासुतोऽवतु ।
कोटराक्षो दृशौ पातु शिखिकण्ठनिभः श्रुती ॥२॥
घ्राणं मे भीषणः पातु मुखं बलिमुखोऽवतु ।
स्कन्धौ संवर्तकः पातु भुजौ मे भयदोऽवतु ॥३॥
सौरिर्मे हृदयं पातु नाभिं शनैश्चरोऽवतु ।
ग्रहराजः कटिं पातु सर्वतो रविनन्दनः ॥४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पादौ मन्दगतिः पातु कृष्णः पात्वखिलं वपुः ।
रक्षामेतां पठेन्नित्यं सौरेर्नामबलैर्युताम् ॥५॥
सुखी पुत्रो चिरायुश्च स भवेन्नात्र संशयः ।
ॐसौरिःशनैश्चरःकृष्णोनीलोत्पलनिभःशनिः ॥६॥
शुष्कोदरो विशालाक्षो दुर्निरीक्ष्यो विभीषणः ।
शिखिकण्ठनिभो नीलश्छायाहृदयनन्दनः ॥७॥
कालदृष्टिः कोटराक्षः स्थूलरोमा बलीमुखः ।
दीर्घो निर्मांसगात्रस्तु शुष्को घोरो भयानकः ॥८॥
नीलांशुः क्रोधनो रौद्रो दीर्घश्मश्रुर्जटाधरः ।
मन्दो मन्दगतिः खञ्जोऽतृप्तः संवर्तको यमः ॥९॥
ग्रहराजः कराली च सूर्यपुत्रो रविः शशी ।
कुजो बुधो गुरुः काव्यो भानुजः सिंहिकासुतः ॥१०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

केतुर्देवपतिर्बाहुः कृतान्तो नैर्ऋतस्तथा ।
शशी मरुत्कुबेरश्च ईशानः सुर आत्मभूः ॥११॥
विष्णुर्हरो गणपतिः कुमारः काम ईश्वरः ।
कर्ता हर्ता पालयिता राज्यभुग् राज्यदायकः ॥१२॥
छायासुतः श्यामलांगो धनहर्ता धनप्रदः ।
क्रूरकर्मविधाता च सर्वकर्मावरोधकः ॥१३॥
तुष्टो रुष्टः कामरूपः कामदो रविनन्दनः ।
ग्रहपीडाहरः शान्तो नक्षत्रेशो ग्रहेश्वरः ॥१४॥
स्थिरासनः स्थिरगतिर्महाकायो महाबलः ।
महाप्रभो महाकालः कालात्मा कालकालकः ॥१५॥
आदित्यभयदाता च मृत्युरादित्यनन्दनः ।
शतभिरुक्षदयितः त्रयोदशतिथिप्रियः ॥१६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तिथ्यात्मा तिथिगणो नक्षत्रगणनायकः ।
योगराशिर्मुहूर्तात्मा कर्ता दिनपतिः प्रभुः ॥१७॥
शमीपुष्पप्रियः श्यामस्त्रैलोक्याभयदायकः ।
नीलवासाः क्रियासिन्धुर्नीलाञ्जनचयच्छविः ॥१८॥
सर्वरोगहरो देवः सिद्धो देवगणस्तुतः ।
अष्टोत्तरशतं नाम्नां सौरेश्छायासुतस्य यः ॥१९॥
पठेन्नित्यं तस्य पीडा समस्ता नश्यति ध्रुवम् ।
कृत्वा पूजां पठेन्मर्त्यो भक्तिमान्यः स्तवं सदा ॥२०॥
विशेषतः शनिदिने पीडां तस्य विनश्यति ।
जन्मलग्ने स्थितिर्वापि गोचरे क्रूरराशिगे ॥२१॥
दशासु च गते सौरेस्तदा स्तवमिमं पठेत् ।
पूजयेद्यः शनिं भक्त्या शमीपुष्पाक्षताम्बरैः ॥२२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विधाय लोहप्रतिमां नरो दुःखाद्विमुच्यते ।
बाधा याऽन्यग्रहाणां च यः पठेत्तस्य नश्यति ॥२३॥
भीतो भयाद्विमुच्येत बद्धो मुच्येत बन्धनात् ।
रोगी रोगाद्विमुच्येत नरः स्तवमिमं पठेत् ॥२४॥
पुत्रवान्धनवान् श्रीमाञ्जायते नात्र संशयः ॥२५॥

नारद उवाच

स्तवं निशम्य पार्थस्य प्रत्यक्षोऽभूच्छनैश्चरः ।
दत्त्वा राज्ञे वरं कामं शनिश्चान्तर्दधे तदा ॥२६॥

॥ *श्रीभविष्यपुराणे शनैश्चरस्तवराजः सम्पूर्णः* ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री गणेशाय नमः

शनिस्तोत्रम् (ब्रह्माण्डपुराणोक्तम्)

विनियोगः अस्य श्रीशनैश्चरस्तोत्रस्य दशरथ ऋषिः । श्री शनैश्चरो देवता । त्रिष्टुप् छन्दः । शनैश्चरप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ॥

दशरथ उवाच

कोणोऽन्तको रौद्रयमोऽथ बभ्रुः
कृष्णः शनिः पिंगलमन्दसौरिः ।
नित्यं स्मृतो यो हरते च पीडां
तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥१॥
सुरासुराः किम्पुरुषोरगेन्द्रा
गन्धर्व-विद्याधर-पन्नगाश्च ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पीडयन्ति सर्वे विषमस्थितेन
तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥२॥

नरा नरेन्द्रा पशवो मृगेन्द्रा
वन्याश्च ये कीटपतङ्गभृङ्गाः ।
पीडयन्ति सर्वे विषमस्थितेन
तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥३॥

देशाश्च दुर्गाणि वनानि यत्र
सेनानिवेशाः पुरपत्तनानि ।
पीडयन्ति सर्वे विषमस्थितेन
तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥४॥

तिलैर्यवैर्माषगुडान्नदानै-
र्लोहेन नीलाम्बरदानतो वा ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रीणाति मन्त्रैर्निजवासरे च
तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥५॥

प्रयागकूले यमुनातटे च
सरस्वतीपुण्यजले गुहायाम् ।
यो योगिनां ध्यानगतोऽपि सूक्ष्मः
तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥६॥

अन्यप्रदेशात्स्वगृहं प्रविष्टः
तदीयवारे च नरः सुखी स्यात् ।
गृहाद्गतो यो न पुनः प्रयाति
तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥७॥

स्रष्टा स्वयम्भूर्भुवनत्रयस्य
त्राता हरीशो हरते पिनाकी ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एकस्त्रिधा ऋग्यजुःसाममूर्तिः
तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥८॥

शन्यष्टकं यः प्रयतः प्रभाते
नित्यं सुपुत्रैः पशुबान्धवैश्च ।
पठेत्तु सौख्यं भुवि भोगयुक्तः
प्राप्नोति निर्वाणपदं तदन्ते ॥९॥

कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः ।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः ॥१०॥

एतानि दश नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।
शनैश्चरकृता पीडा न कदाचिद्भविष्यति ॥११॥

॥ *श्री ब्रह्माण्डपुराणे शनैश्चरस्तोत्रं सम्पूर्णम्* ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री गणेशाय नमः

शनिवज्रपञ्जरकवचम्

विनियोगः अस्य श्रीशनैश्चरकवचस्तोत्रमन्त्रस्य कश्यप ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । शनैश्चरो देवता । शीं शक्तिः । क्लीं कीलकम् । शनैश्चरप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ॥

विनियोग पढ़कर पञ्चपात्र में से अथवा दाहिनी अञ्जलि में लिया हुआ जल भूमि पर छोड़ दें । इसके पश्चात् कवच पाठ करें ।

नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी,
गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान् ।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रसन्नः,
सदा मम स्याद्वरदः प्रशान्तः ॥१॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्रह्मोवाच

शृणुध्वमृषयः सर्वे शनिपीडाहरं महत् ।
कवचं शनिराजस्य सौरेरिदमनुत्तमम् ॥२॥
कवचं देवतावासं वज्रपञ्जरसंज्ञकम् ।
शनैश्चरप्रीतिकरं सर्वसौभाग्यदायकम् ॥३॥
ॐ श्रीशनैश्चरः पातु भालं मे सूर्यनन्दनः ।
नेत्रे छायात्मजः पातु पातु कर्णौ यमानुजः ॥४॥
नासां वैवस्वतः पातु मुखम्मे भास्करस्सदा ।
स्निग्धकण्ठश्च मे कण्ठं भुजौ पातु महाभुजः ॥५॥
स्कंधौ पातु शनिश्चैव करौ पातु शुभप्रदः ।
वक्षः पातु यमभ्राता कुक्षिं पात्वसितस्तथा ॥६॥
नाभिं ग्रहपतिः पातु मंदः पातु कटिं तथा ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऊरू ममान्तकः पातु यमो जानुयुगं तथा ॥७॥
पादौ मंदगतिः पातु सर्वांगं पातु पिप्पलः ।
अङ्गोपाङ्गानि सर्वाणि रक्षेन्मे सूर्यनन्दनः ॥८॥
इत्येतत् कवचं दिव्यं पठेत् सूर्यसुतस्य यः ।
न तस्य जायते पीडा प्रीतो भवति सूर्यजः ॥९॥
व्ययजन्मद्वितीयस्थो मृत्युस्थानगतोऽपि वा ।
कलत्रस्थो गतो वापि सुप्रीतस्तु सदा शनिः ॥१०॥
अष्टमस्थे सूर्यसुते व्यये जन्मद्वितीयगे ।
कवचं पठते नित्यं न पीडा जायते क्वचित् ॥११॥
इत्येतत् कवचं दिव्यं सौरेर्यन्निर्मितं पुरा ।
द्वादशाष्टम-जन्मस्थ-दोषान्नाशयते सदा ।
जन्मलग्नस्थितान् दोषान् सर्वान्नाशयते प्रभुः ॥१२॥

॥ *श्रीब्रह्माण्डपुराणे ब्रह्मनारदसंवादे शनिवज्रपञ्जरकवचं सम्पूर्णम्* ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तन्त्रसारोक्तं शनिमन्त्रजपविधानम्

विनियोग: ॐ अस्य श्रीशनैश्चरमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, शनैश्चरो देवता, शं बीजम्, आपः शक्तिः, श्रीशनैश्चरप्रीतये जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास: ॐ ब्रह्मऋषये नमः, शिरसि । ॐ गायत्रीछन्दसे नमः, मुखे । ॐ शनैश्चरदेवतायै नमः, हृदि । शं बीजाय नमः, गुह्ये। आपः शक्तये नमः, पादयोः, इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास: ॐ शं अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ शं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ शं मध्यमाभ्यां नमः । शं अनामिकाभ्यां नमः । ॐ शं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ शं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः, इति करन्यासः ।

हृदयादिन्यास: ॐ शं हृदयाय नमः । ॐ शं शिरसे स्वाहा । ॐ शं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शिखायै वषट् । ॐ शं कवचाय हुम् । ॐ शं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ शं अस्त्राय फट् । इस प्रकार से हृदयादि न्यास करके ध्यान करें ।

ध्यानम्

ॐ नीलाञ्जनाभं मिहिरस्य पुत्रं ग्रहेश्वरं पाशभुजङ्गपाणिम् ।
सुराऽसुराणां भयदं द्विबाहुं भजे शनिं मानसपंकजेऽहम् ॥१॥
नीलंद्युतिं शूलधरं किरीटिनं गृध्रस्थितं त्रासकरं धनुर्धरम् ।
चतुर्भुजं सूर्यसुतं प्रशान्तं वन्दे सदाऽभीष्टकरं वरेण्यम् ॥२॥

इस प्रकार शनिदेव का ध्यान कर मानसोपचार या यथामिलितोपचार से पूजा कर निम्नलिखित मन्त्र का जप करें ।

जपमन्त्रः **ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

जप संख्या २३,००० । कलियुग में ९२,००० ।

॥ *तन्त्रसारोक्तं शनिमन्त्रजपविधानं सम्पूर्णम्* ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वेदतन्त्रपुराणोक्तं शनिमन्त्रानुष्ठानम्

सबीजं वैदिकशनिमन्त्रविधानम्

विनियोग: शन्नो देवीरिति मन्त्रस्य दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिः गायत्रीछन्दः आपो देवता, शनिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

मन्त्र: ॐ खां खीं खौं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु नः। ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः खौं खीं खां ॐ (शनैश्चराय नमः)।

तन्त्रोक्तबीजमन्त्र: ॐ प्रां प्रीं प्रौं शनये नमः।

बीजमन्त्र:(पंजिका) ॐ ऐं ह्लीं स्त्रीं शनैश्चराय नमः।

जपसंख्या १९,०००।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पुराणोक्तशनिमन्त्रः

ह्रीं नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्त्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥

शनिगायत्रीमन्त्रः

ॐ भगभवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि । तन्नो सौरिः प्रचोदयात् ।

रत्नधारण विधि

भगवान् शनि को प्रसन्न करने के लिए नीलम या काले घोड़े की नाल या नाव के कील की अँगूठी शनिवार के दिन अग्न्युत्तारण मन्त्रों से पञ्चगव्य से अभिषिक्त कर प्राण प्रतिष्ठा करें और शनि मन्त्र से अभिमन्त्रित कर मध्यमा अंगुली में धारण करें ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धारणार्थ औषधि

भगवान् शनि को प्रसन्न करने के लिए **शमी** वृक्ष (छौकरा या जांटी) की मूल (जड़) शनिवार के दिन मध्यमा अंगुली में नीले या काले वस्त्र में या ताबीज में बाँध कर धारण करनी चाहिए ॥

श्रीशनि के दस नाम

१. कोणस्थाय नमः
२. पिङ्गलाय नमः
३. बभ्रवे नमः
४. कृष्णाय नमः
५. रौद्रान्तकाय नमः
६. यमाय नमः
७. सौरये नमः
८. शनैश्चराय नमः
९. मन्दाय नमः
१०. पिप्पलाश्रयसंस्थिताय नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शन्यष्टोत्तरशतनामावलिः

१. ॐ सौरये नमः
२. ॐ शनैश्चराय नमः
३. ॐ कृष्णाय नमः
४. ॐ नीलोत्पलनिभाय नमः
५. ॐ शनये नमः
६. ॐ शुष्कोदराय नमः
७. ॐ विशालाक्षाय नमः
८. ॐ दुर्निरीक्ष्याय नमः
९. ॐ विभीषणाय नमः
१०. ॐ शिखिकण्ठनिभाय नमः
११. ॐ नीलश्छायांहृदयनन्दनाय नमः
१२. ॐ कालदृष्टये नमः
१३. ॐ कोटराक्षाय नमः
१४. ॐ स्थूलरोम्ने नमः
१५. ॐ बलीमुखाय नमः
१६. ॐ दीर्घाय नमः
१७. ॐ निर्मांसगात्राय नमः
१८. ॐ शुष्काय नमः
१९. ॐ घोराय नमः
२०. ॐ भयानकाय नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२१. ॐ नीलांशवे नमः
२२. ॐ क्रोधनाय नमः
२३. ॐ रौद्राय नमः
२४. ॐ दीर्घश्मश्रवे नमः
२५. ॐ जटाधराय नमः
२६. ॐ मन्दाय नमः
२७. ॐ मन्दगतये नमः
२८. ॐ खञ्जाय नमः
२९. ॐ अतृप्ताय नमः
३०. ॐ संवर्तकाय नमः
३१. ॐ यमाय नमः
३२. ॐ ग्रहराजाय नमः
३३. ॐ करालये नमः
३४. ॐ सूर्यपुत्राय नमः
३५. ॐ रवये नमः
३६. ॐ शशिने नमः
३७. ॐ कुजाय नमः
३८. ॐ बुधाय नमः
३९. ॐ गुरवे नमः
४०. ॐ काव्याय नमः
४१. ॐ भानुजाय नमः
४२. ॐ सिंहिकासुताय नमः
४३. ॐ केतवे नमः
४४. ॐ देवपतिर्बाहवे नमः
४५. ॐ कृतान्ताय नमः
४६. ॐ नैर्ऋताय नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

४७. ॐ शशिने नमः
४८. ॐ मरुते नमः
४९. ॐ कुबेराय नमः
५०. ॐ ईशानाय नमः
५१. ॐ सुराय नमः
५२. ॐ आत्मभवे नमः
५३. ॐ विष्णावे नमः
५४. ॐ हराय नमः
५५. ॐ गणपतये नमः
५६. ॐ कुमाराय नमः
५७. ॐ कामाय नमः
५८. ॐ ईश्वराय नमः
५९. ॐ कर्त्रे नमः
६०. ॐ हर्त्रे नमः
६१. ॐ पालयित्रे नमः
६२. ॐ राज्यभुगे नमः
६३. ॐ राज्यदायकाय नमः
६४. ॐ छायासुताय नमः
६५. ॐ श्यामलांगाय नमः
६६. ॐ धनहर्त्रे नमः
६७. ॐ धनप्रदाय नमः
६८. ॐ क्रूरकर्मविधात्रे नमः
६९. ॐ सर्वकर्मावरोधकाय नमः
७०. ॐ तुष्टाय नमः
७१. ॐ रुष्टाय नमः
७२. ॐ कामरूपाय नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

७३. ॐ कामदाय नमः
७४. ॐ रविनन्दनाय नमः
७५. ॐ ग्रहपीडाहराय नमः
७६. ॐ शान्ताय नमः
७७. ॐ नक्षत्रेशाय नमः
७८. ॐ ग्रहेश्वराय नमः
७९. ॐ स्थिरासनाय नमः
८०. ॐ स्थिरगतये नमः
८१. ॐ महाकायाय नमः
८२. ॐ महाबलाय नमः
८३. ॐ महाप्रभवे नमः
८४. ॐ महाकालाय नमः
८५. ॐ कालात्मने नमः
८६. ॐ कालकालकाय नमः
८७. ॐ आदित्यभयदात्रे नमः
८८. ॐ मृत्यवे नमः
८९. ॐ आदित्यनन्दनाय नमः
९०. ॐ शतभिरुक्षदयिताय नमः
९१. ॐ त्रयोदशतिथिप्रियाय नमः
९२. ॐ तिथ्यात्मने नमः
९३. ॐ तिथिगणाय नमः
९४. ॐ नक्षत्रगणनायकाय नमः
९५. ॐ योगराशये नमः
९६. ॐ मुहूर्तात्मने नमः
९७. ॐ कर्त्रे नमः
९८. ॐ दिनपतये नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

९९. ॐ प्रभवे नमः
१००. ॐ शमीपुष्पप्रियाय नमः
१०१. ॐ श्यामाय नमः
१०२. ॐ त्रैलोक्याभयदायकाय नमः
१०३. ॐ नीलवाससे नमः
१०४. ॐ क्रियासिन्धवे नमः
१०५. ॐ नीलाञ्जनचयच्छवये नमः
१०६. ॐ सर्वरोगहरोदेवाय नमः
१०७. ॐ सिद्धाय नमः
१०८. ॐ देवगणस्तुताय नमः

॥श्रीशन्यष्टोत्तरशतनामावलिःसम्पूर्णा॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री शनैश्चराय नमः

श्री शनि-चालीसा

दोहा

जय गणेश गिरजा सुवन, मंगल करण कृपाल।
दीनन के दुःख दूर करि, कीजै नाथ निहाल॥
जय-जय श्री शनिदेव प्रभु, सुनहु विनय महाराज।
करहु कृपा हे रवि तनय, राखहु जन की लाज॥

जयति-जयति शनिदेव दयाला। करत सदा भक्तन प्रतिपाला॥
चारि भुजा, तनु श्याम विराजै। माथे रतन मुकुट छबि छाजै॥
परम विशाल मनोहर भाला। टेढ़ी दृष्टि भृकुटि विकराला॥
कुण्डल श्रवण चमाचम चमकै। हिये माल मुक्तन मणि दमकै॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कर में गदा त्रिशूल कुठारा । पल में करैं अरिहिं संहारा ॥
पिङ्गल कृष्णो, छाया नन्दन । यम, कोणस्थ, रौद्र, दुख भंजन ॥
सौरी, मन्द, शनी दश नामा। भानु पुत्र पूजहिं सब कामा ॥
जा पर प्रभु प्रसन्न है जाहीं । रंकहि राव करैं क्षण माहीं ॥
पर्वतहू तृण होइ निहारत। तृणहूँ को पर्वत करि डारत ॥
राज मिलत बन रामहिं दीन्ह्यो। कैकेइहुँ की मति हरि लीन्ह्यो ॥
वनहू में मृग कपट दिखाई। मात जानकी गई चुराई ॥
लखणहिं शक्ति विकल करिडारा। मचिगा दल में हाहाकारा ॥
रावण की गति-मति बौराई। रामचन्द्र सों बैर बढ़ाई ॥
दियो कीट करि कंचन लङ्का। बजि बजरंग वीर का डंका ॥
नृप विक्रम पर तुहिं पगु धारा। चित्र मयूर निगलि गै हारा ॥
हार नौलखा लाग्यो चोरी। हाथ - पैर डरवायो तोरी ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भारी दशा निकृष्ट दिखायो। तेलिहिं घर कोल्हू चलवायो ॥
विनय राग दीपक महँ कीन्ह्यों। तब प्रसन्न प्रभु है सुख दीन्ह्यों ॥
हरिश्चन्द्रहुँ नृप नारि बिकानी। आपहुँ भरें डोम घर पानी ॥
तैसे नल पर दशा सिरानी। भूँजी - मीन कूद गई पानी ॥
श्री शङ्करहिं गह्यो जब जाई। पारवती को सती कराई ॥
तनिक विलोकतही करि रीसा। नभ उड़ि गयो गौरी-सुत-सीसा ॥
पाण्डव पर भै दशा तुम्हारी। बचीं द्रौपदी होति उघारी ॥
कौरव के भी गति मति मार्‍यो। युद्ध महाभारत करि डार्‍यो ॥
रवि कह मुख महँ धरि तत्काला। लेकर कूदि पर्‍यो पाताला ॥
शेषदेव - लखि विनति लाई। रवि को मुख से दियो छुड़ाई ॥
नौ वाहन शनि के सुखधामा। गज गर्दभ अरु अश्व ललामा ॥
जम्बुक सिंह मेख अरु कागा। हंस मयूर सहित अनुरागा ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गज वाहन पर जब प्रभु राजैं। सर्व सिद्ध करि अरि सुख साजैं॥
जब गर्दभ पर दुहुँ पग धारैं। जन कह मान भंग करि डारैं॥
हय चढ़ि देयँ धान्य धन भारी। जम्बुक ते हो युद्ध करारी॥
सिंहारूढ़ जबै प्रभु आवैं। सब प्रकार से न ाश करावैं॥
मेढ़ा के वाहन जब आवहिं। अतिशय जन को रोग सतावहिं॥
वाहन काग-काल-मुख डारै। हंस परम आनन्द पसारै॥
मोर बैठि अतिशय सुख देवैं। करि पूजन जन शुभ फल लेवैं॥
जो यह शनि चरित्र नित गावै। कबहुँ न दशा निकृष्ट सतावै॥
अद्भुत नाथ दिखावैं लीला। करैं शत्रु के नसि-नसि ढीला॥
जो पण्डित सुयोग्य बुलवावैं। विधिवत् शनि-ग्रह शान्ति करावैं॥
पीपल-जलशनि-दिवस चढ़ावहिं। दीप दाप दै बहु सुख पावहिं॥
नमत राम सुन्दर ऋषि-दासा। शनि सुमिरत सुख करत प्रकासा॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दोहा

प्रतिमा श्री शनिदेव की, लौह - धातु बनवाय ।
प्रेम सहित पूजन करै, सकल कष्ट कटि जाय ॥
चालीसा नित नेम यह, कहहिं सुनहिं धरिध्यान ।
निश्चय शनि-ग्रह सुखद है नर पावहिं सम्मान ॥

॥ श्री शनि चालीसा सम्पूर्ण ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भगवान् शनिदेव की आरती

जय श्री शनिदेवा, स्वामि जय श्री शनि देवा ।
सब में आप शिरोमणि मानत सब देवा ॥ टेक ॥
सभी ग्रहों से बढ़ कर महिमा अति भारी ।
सूरज पुत्र कहायो मानत संसारी ॥ जय श्री०॥
क्रोध दशा में हो जाते सब तुम अनिष्टकर्ता ।
राजी हो बन जाते सब ही के दुःखहर्ता ॥ जय श्री०॥
विक्रमादित्य राजा जी ने भूल करी भारी ।
साढ़े साती में भुगता राजा ने विपदा भारी ॥ जय श्री०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सबमें आप प्रबल हो जगमें महिमा तव भारी ।
धन-सम्पत्ति सुख देवो कर दो सुखियारी ॥ जय श्री०॥
शनिवार है वार आपका पूजत नर-नारी ।
दान-मान बहुत करते प्रेम सहित भारी ॥ जय श्री०॥
श्री शनि देव की आरती जो कोई नर गावे ।
शिव कहते निश्चयही सो नर शनि दया पावे ॥
जय श्री शनिदेवा, स्वामि जय श्री शनि देवा ॥

॥ *श्री शनिदेव की आरती सम्पूर्ण* ॥

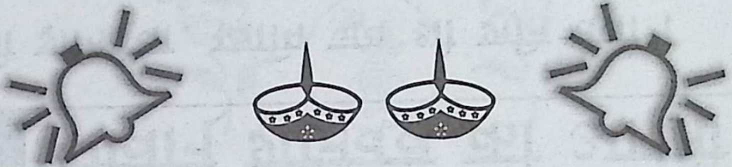

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शनिवार के दिन करने योग्य कार्य

शनिवार के दिन निम्नलिखित कार्य शुभ तथा शनिग्रहजनित दोष निवारण हेतु शुभ माने जाते हैं ।

१. तिल तैल से स्नान करना या तेल लगाना ।
२. पिप्पल को जल चढ़ाना ।
३. पिप्पल के नीचे तिल तैल का दीप जलाना ।
४. पिप्पल के नीचे हनुमदुपासना व सुन्दरकाण्ड का पाठ ।
५. पश्चिम दिशा की यात्रा ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शनिवार के दिन वर्जित कार्य

जिस प्रकार से शनिवार को उपर्युक्त दान सामग्री शनि दान लेने वाले पण्डित जी को दी जाती है उसी प्रकार शनिवार के दिन ये वस्तुएँ घर में लाना शुभ नहीं माना जाता है । इसलिए शनिवार के दिन तेल, उड़द, लौह से निर्मित एवं काली वस्तुएँ खरीद कर अथवा निर्मूल्य (अर्थात् दान स्वरूप) भी घर में नहीं लानी चाहिए । स्थिर कार्यों के अतिरिक्त कोई भी शुभ कार्य शनि के दिन न करें ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शनिदान सामग्री

नीलम रत्न
काले तिल
माषान्न (उड़द)
तिल या सरसों तेल
काला वस्त्र
कुलथी
लोहा

काली भैंस
काली गाय
काला पुष्प
काला जूता
छाता
कस्तूरी
सुवर्ण

दानसमय- मध्याह्नकाल

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूजा-सामग्री

रोली	सिन्दूर	पुष्प	सर्वौषधि
मौली	सरसों पीली	पुष्पमाला	पंचामृत
हल्दी	मिश्री	बिल्वपत्र	पञ्चपल्लव
मेंहदी	पंचमेवा	दूर्वा	सप्तमृत्तिका
अबीर	चन्दन	तुलसी	समिधा शमी,पीपल
अभ्रक	यज्ञोपवीत	गंगाजल	देववस्त्रादि
सुपारी	रूई	तिल	शृंगार सामग्री
कर्पूर	दियासलाई	चावल	प्रधान स्वर्ण प्रतिमा
लवंग	नारियल	जौ	कलश
इलायची	नैवेद्य	शर्करा	काष्ठकी चौकी
केशर	पान	घृत	वरण सामग्री
इत्र	ऋतुफल	सुगन्धित औषधि	ऊर्णासन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

श्री मंत्र रामायण

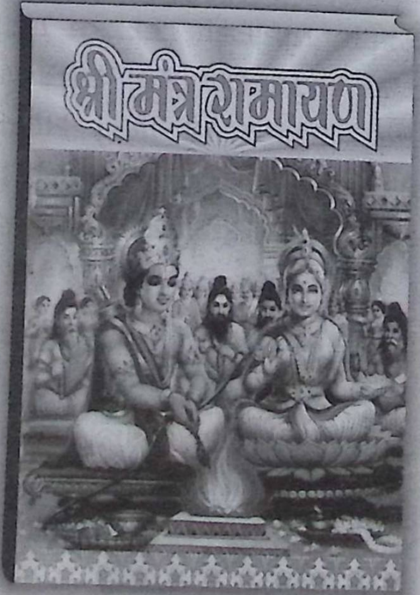

गोस्वामी तुलसीदास रचित श्रीरामचरितमानस के दोहे चौपाईयाँ मंत्रों का कार्य करते हैं।

ऐसे ही कुछ मंत्रों का संग्रह मंत्र रामायण नामक इस पुस्तक में किया गया है। इन मंत्रों का सम्पुट लगाकर पाठ करने से निश्चय ही भिन्न-भिन्न मनोकामनाएँ पूरी होती हैं। इन्हें बहुतों ने आजमाया है। आप भी अपनी मनोकामना पूर्ण कीजिये।

पृष्ठ संख्या : १२८
मूल्य : रु. २५.००
डाक व्यय पृथक

इन मंत्रों का सम्पुट लगाकर पाठ करने से निश्चय ही भिन्न-भिन्न मनोकामनाएँ पूरी होती हैं।

सन् १८९९ ई० पूर्व स्थापित पुस्तक प्रकाशन परम्परा

प्रकाशक – हर प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता:

नाथ पुस्तक भण्डार

११४-दरीबा कलां, दिल्ली-११०००६, दूरभाष: २३२७५३४४

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीसूक्तम्

लक्ष्मीसूक्त-पुरुषसूक्त-हिन्दी अनुवाद सहित

दरिद्रता और दीनताहीन जीवन से छूटने के लिये ऋषियों ने अनेक प्रकार के अनुष्ठान, जप-तप और दान आदि कर्मों का विधान कहा है।

ऋग्वेद के परिशिष्ट-श्रीसूक्त में धन प्राप्ति के लिये मंत्र हैं। **वाराणसी के विद्वान् उमेश मिश्र (सुपुत्र श्री वेणीराम गौड़)** ने इन मंत्रों का सरल हिन्दी में अनुवाद किया है। सम्पुटित श्रीसूक्त, ऋणहर्त्ता गणेशस्तोत्र, बिक्री वृद्धि के लिये मंत्र, कुबेर पूजन एवं श्रीयंत्र व उनकी पूजनविधि आदि भी पुस्तक में सम्मिलित कर दिये हैं जिनके नियमपूर्वक पूजा-पाठ करने से निश्चय ही श्रीलक्ष्मीजी की प्राप्ति होती है।

पृष्ठ संख्या : १६०
मूल्य : रु. ३०.००
डाक व्यय पृथक

इस पुस्तक में ऋग्वेद में वर्णित धन प्राप्ति के मंत्र दिये गये हैं।

प्रत्येक पुस्तक के साथ पूजा के लिये रंगीन श्रीयंत्र मुफ्त संलग्न है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

शनि उपासना

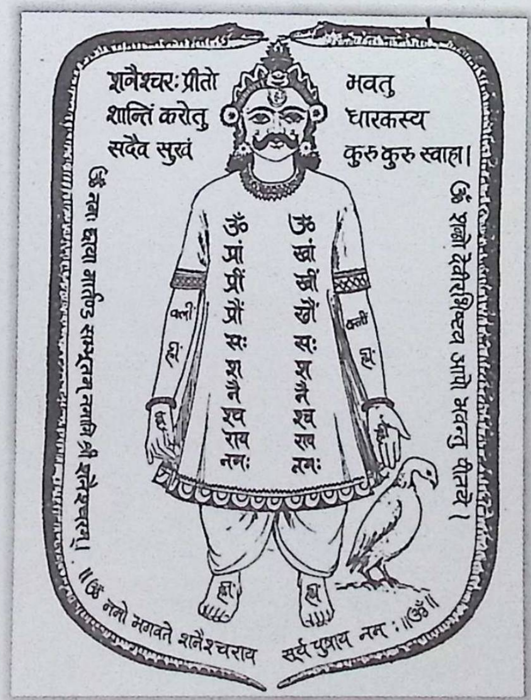

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

हिन्दी पंचांग **तिथि निर्णय**™ (बहुरंगी) एवम् **पंडित पंचांग** (दो रंगों में छपा)

दोनों ही पंचांग अधिक उपयोगी सामग्री के साथ प्रस्तुत हैं।

❀ मुख्यत: तारीख ❀ तिथि का समय कब से कब तक ❀ विक्रम-शाका व राष्ट्रीय सम्वत् ❀ अमुक व्रत, त्यौहार, कथा– कब और कैसे मनायें ❀ छुट्टियाँ ❀ नक्षत्र-राशि प्रवेश ❀ प्रत्येक दिन की चन्द्र स्थिति ❀ चन्द्रमा-सूर्य-मंगल आदि ग्रहों का उदय-अस्त ❀ विवाह आदि मुहूर्त्त ❀ पंचक ❀ मूल ❀ भद्रा ❀ शुभ-अशुभ योग ❀ सूर्य-चन्द्र ग्रहण, कुम्भ की जानकारी ❀ ग्रह पीड़ा निवारण मंत्र-यंत्र-तंत्र उपाय ❀ राशि ज्ञान-फल, शुभ वार, शुभ रंग, शुभ अंक सहित ❀ राशि रत्न धारण विधि ❀ दिन-रात का चौघड़िया ❀ पन्द्रह के यंत्र से शुभ-अशुभ ज्ञान ❀ लाभ-हानि चक्र ❀ राहु (नेष्ट) काल-किस समय शुभ कार्य नहीं करना चाहिए ❀ अभिजित काल-अमुक दिन शुभ मुहूर्त्त न होने पर भी शुभ कार्य कब करें ❀ दिशाशूल दोष परिहार-यात्रा के दिन दिशाशूल होने पर भी यात्रा दिशाशूल दोष दूर कर कैसे करें ❀ दूध-अखबार हिसाब का कोष्टक ❀ मौसम ❀ तेजी-मंदी/मार्किट रुख ❀ विश्व घटना चक्र ❀ देवी-देवताओं के बहुरंगी चित्र व उनके जपनीय मंत्र ❀ गीतासार ❀ भगवान राधा-कृष्ण की लीला स्थली मथुरा-वृन्दावन के मंदिरों में मनाये जाने वाले विशेष पर्व-उत्सवों का विशेष वर्णन आदि उपयोगी सामग्री से सुसज्जित हैं।

साईज 28 × 44 से० मी०　　पृष्ठ संख्या 26　　मूल्य : रु. २५.०० : रु. १५.००

सन् १८९९ पूर्व स्थापित पुस्तक प्रकाशन परम्परा

प्रकाशक : पूजा-पाठ व धार्मिक पुस्तकों के प्रमुख विक्रेता

नाथ पुस्तक भण्डार

१९४-दरीबा कलां, दिल्ली-११०००६　दूरभाष : २३ २७ ५३ ४४

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection